RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भारतीय राजनीतिक संस्कृति का स्वरूप

विजय सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक

राजनीतिक संस्कृति में किसी देश की राजनीतिक प्रणाली के प्रति वहां के लोगों के दृष्टिकोण, विश्वास, लगन तथा मूल्य समाहित हैं। दूसरे शब्दों में राजनीतिक प्रणाली के संदर्भ में लोगों के राजनीतिक विश्वास, भावनाएं और दृष्टिकोण होते हैं, उन्हें सामूहिक रूप में राजनीतिक संस्कृति कहा जाता है। राजनीतिक संस्कृति आधुनिक राजनीति विज्ञान का एक महत्वपूर्ण तथा नवीन दृष्टिकोण है। यह मनोविज्ञान और समाज शास्त्र को एकीकृत करने का प्रयास है ताकि राजनीतिक विश्लेषण सही प्रयुक्त हो सके। राजनीति शास्त्र के साहित्य में राजनीतिक संस्कृति का आगमन 1956 से स्वीकार किया जाता है। आमंड एवं पावेल के विचारानुसार, ''राजनीतिक संस्कृति में ऐसे दृष्टिकोण, विश्वास, मूल्य और कला मिलती है जो संपूर्ण जनसंख्या में प्रचलित हैं। इसमें वे प्रवृतियां और नमूने भी सम्मिलित है जो उस जनसंख्या के विभिन्न भागों में मिलते हैं।''

ल्यूसियन पाई के अनुसार, ''राजनीतिक संस्कृति ऐसे दृष्टिकोणों, विश्वासों और भावनाओं का समूह है जो राजनीतिक विद्यि को व्यवस्था एवं अर्थ प्रदान करता है और जो उन निहित धारणाओं और नियमों की व्यवस्था करते हैं जिनके आधार पर राजनतिक प्रणाली के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। राजनीतिक आदर्श और राजनीतिक प्रणाली के प्रचलित लक्षण भी इसके वृत में आते हैं। इस प्रकार राजनीतिक संस्कृति के मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिनिष्ठ पलों की सामूहिक रूप में अभिव्यक्ति है।''

फाईनर के अनुसार ''राष्ट्र की राजनीतिक संस्कृति मुख्य रूप से शासकों, राजनीतिक संस्थाओं तथा राजनीतिक प्रकियाओं की औचित्यपूर्णता को प्रकट करती है।''

भारत की राजनीतिक संस्कृति के आधार :– भारतीय राजनीतिक संस्कृति के आधारभूत तत्व निम्नलिखित हैं –

1 **सामाजिक संरचना का आधार –** ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से जो एक विशेष प्रकार की संस्कृति बन जाती है उसमें परिवर्तन लाने हेतू किसी समाज की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना ही उत्तरदायी होती है। यदि किसी देश के सामाजिक जीवन में जाति, धर्म, लिंग, वंश और वर्ग के आधार पर बहुत अधिक विभिन्नता हो तो लोकतांत्रिक राजनीतिक संस्कृति स्थापित होना बहुत मुश्किल हो जाता है। भारत का समाज जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्रवाद आदि तत्वों से प्रभावित हो रहा है जिसके कारण भारतीय राजनीतिक संस्कृति पर इनका अत्याधिक प्रभाव पडा हुआ है। जाति ने भारत की राजनीति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। जाति के आधार पर उम्मीदवारों का चयन होता है। भारत की राजनीतिक संस्कृति में जाति, धर्म, क्षेत्रवाद और भाषा आदि तनाव और संकट पैदा करने में उत्तरदायी बने हैं।

2 **ऐतिहासिक आधार –** किसी भी राजनीतिक व्यवस्था के लिए इतिहास से संबंध विच्छेद करना सम्भव नही है। इतिहास किसी भी राजनीतिक संस्कृति को विशेष आकार प्रदान करने वाला प्रमुख आधार है। राजनीतिक संस्कृति को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना अनिवार्य है। उदाहरणस्वरूप इंग्लैंड का इतिहास वहां के लोगों की शांतिपूर्ण परिवर्तन की इच्छाशक्ति को उजागर करता है, वहीं फ्रांस का इतिहास हिंसक आंदोलनों का गवाह है। भारत ब्रिटेन का उपनिवेश रहा, इसलिए भारत की राजनीतिक संस्कृति पर ब्रिटेन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भारत में कानून का शासन और संसदीय शासन प्रणाली से संबंधित धारणा ब्रिटिश शासन व्यवस्था की देन है। इसलिए इतिहास राजनीतिक संस्कृति का अवश्य ही एक आधार है।

3 **भौगोलिक आधार –** भूगोल राजनीतिक संस्कृति का मुख्य आधार है। किसी देश की राजनीतिक संस्कृति के निर्माण में उस देश की भौगोलिक अवस्था महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण स्विटजरलैंड ने तटस्थता की नीति को अपनाया है। जिसके कारण वह विश्व राजनीति में सक्रिय भाग नहीं ले पाता है। नेपाल की सीमा से समुंद्र नहीं लगता है इसलिए वह अपने विदेशी व्यापार के लिए भारत पर निर्भर है। भारत ने भौगौलिक स्थिति व विश्व परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण किया।

4 **विचारधारा का आधार –** विचारधारा भी राजनीतिक संस्कृति का एक मुख्य आयाम है। जर्मनी और इटली

RRIJM 2015, All Rights Reserved

की राजनीतिक संस्कृति को नाजीवाद तथा फासीवाद ने प्रभावित किया। उदारवादी विचारों से इंग्लैंड व अमेरिका जैसे देश प्रभावित हुए। मार्क्सवादी विचारधारा ने भूतपूर्व सोवियत संघ, चीन तथा पूर्वी यूरोपीय देशों में एक विशेष राजनीतिक संस्कृति की पहचान दी। भारतीय राजनीतिक संस्कृति पर भी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। भारत ने गांधीवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद, गुटनिरपेक्षता आदि विचारधाराओं को अपनी राजनीतिक संस्कृति का आधार बनाया है। संविधान निर्माताओं ने गांधीवादी विचारों से प्रभावित होकर नीति निर्देशक सिद्धांतों को संविधान में शामिल किया है।

5 **अहिंसा** – अहिंसा भारतीय राजनीतिक संस्कृति का एक प्रमुख आधार है। भारतीय राजनीति में अहिंसा का अनुसरण प्राचीनकाल से होता रहा है। भारत को अहिंसा परमो धर्म की संस्कृति विरासत में मिली है। अहिंसा का संदेश भारत में जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म द्वारा प्राप्त हुआ है। अहिंसा सिद्धांत से प्रेरित होकर सम्राट अशोक ने युद्ध का परित्याग कर दिया था। भारतीय आजादी के आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धांत पर अमल किया। आजादी के बाद अलगाववाद की भावना, क्षेत्रवाद, पृथक राज्य की मांग, भाषाई मतभेद, सम्प्रदायवाद, हड़ताल, बंद, अनशन आदि का प्रयोग हुआ, फिर भी इनका स्वरूप हिंसक होने के कारण ये जनसमर्थन प्राप्त नहीं कर सके। वर्तमान समय में कर्मचारी यूनियनों द्वारा बंद, अनशन तथा काम छोड़ो की प्रक्रिया, आरक्षण की मांग को लेकर हिंसक आंदोलन आदि को जनता द्वारा घृणा की दृष्टि से देखा गया है। भारत में सत्ताधारी राजनीतिक दल सभी समस्याओं का समाधान अहिंसा का प्रयोग करके हल करने की बात करते हैं।

6 **धार्मिक** विश्वास – भारतीय जनता की धर्म में गहरी निष्ठा है। जनता आत्मा–परमात्मा, लोक–परलोक, ईश्वर, मोक्ष, पुर्नजन्म आदि में आस्था रखती है। भारतीय जनता यह विश्वास करती है कि आज जो उनकी स्थिति है वह पिछले जन्म के कर्म है। भारतीय नेताओं के गलत आचरण पर उन्हें ईश्वर द्वारा दंडित होने पर विश्वास करते हैं। जनता की धर्म के प्रति प्रगाढ आस्था ने उन्हें भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति भाग्यवादी बना दिया है। देश की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक दशा की खराब स्थिति को भाग्य का लिखा मानते हैं। न कि उनके हालात के कारणों को जानने की कौशिश करते है। जबकि परिवर्तन जनता के आंदोलन तथा **क्रांति द्वारा ही संभव है।**

7 **भारतीयों की राजनीतिक उदासीनता** – प्राचीन काल में भारत में वर्ण व्यवस्था स्थापित थी। समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र थे। ब्राह्मण का कार्य शिक्षा व धर्म का प्रचार, क्षत्रिय का कार्य राजनीति में भाग लेना तथा देश की रक्षा करना, वैश्य का व्यापार तथा शूद्र का कार्य तीनों वर्णों की सेवा करना था। राजनीतिक कार्यों का निर्वहन क्षत्रियों द्वारा किया जाता था बाकि जनता राजनीति के प्रति उदासीन रहती थी। मध्यकाल में भी यही स्थिति थी। ब्रिटिशकाल में राजनीतिक कार्यों में जनता की भागीदारी सीमित थी। आजादी के बाद भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित हुई। अब तक भारत में 16 आम चुनाव संपन्न हुए हैं जिन्होंने यह साबित कर दिया है कि भारतयी जनता राजनीति में प्रगाढ निष्ठा नहीं रखती है। भारत में मतदान का प्रतिशत सामान्यत 60 से 75 प्रतिशत तक ही रहता है। शेष नागरिक मतदान करने ही नहीं जाते हैं जिसके कारण भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में कई दोष पैदा हो गए हैं।

भारतीय राजनीतिक संस्कृति की विशेषताएं –

राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का एक भाग है जिसमें समाज की विरासतें होती हैं। राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन एक नवीन धारणा है जिसके माध्यम से राजनीतक व्यवस्था तथा व्यावहारिक राजनीति को समझना आसान है। हर एक देश की राजनीतिक संस्कृति दूसरे देश से अलग होती है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति अन्य देशों ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, चीन तथा जापान की राजनीतिक संस्कृतियों से भिन्न है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1 **भारतीय राजनीति में सामन्तवादी व्यवस्था के तत्व** –

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के अंतर्गत लोकतंत्र, गणतंत्र, व्यस्क मताधिकार, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायपालिका, प्रेस की स्वतंत्रता तथा स्वतंत्र चुनाव आयोग की स्थापना की गई। भारत में आजादी के 70 वर्षों बाद लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना के बावजूद भारतीय राजनीति पर सामंतवादी राजनीतिक संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। भारतीय राजनीति में आज भी महाराजा–महारानी तथा शाही खानदानों का वर्चस्व विद्यमान है। इन व्यक्तियों का क्षेत्र की जनता अत्याधिक सम्मान करती है। इसलिए इनका अपने क्षेत्र की जनता पर बहुत अधिक प्रभाव है। दूसरी तरफ जनता अपने क्षेत्र से निर्वाचित विधायकों एवं सांसदों को श्रेष्ठ समझती है और ये निर्वाचित प्रतिनिधि प्राचीन सामंतों की तरह जीवन यापन करते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2 **भारतीय राजनीति का व्यवसायीकरण** – भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता यह है कि भारतीय राजनीति का व्यवसायीकरण हो गया है। भारतीय नेताओं ने राजनीति को व्यवसाय के रूप में अपना लिया है। भारतीय नेताओं की संतानें राजनीति में प्रवेश कर गई हैं, जिनके कारण भारतीय राजनीति इनकी जागीर बन गई है। इनके द्वारा भारत के बुद्धिजीवी, ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ट व्यक्तियों को राजनीति में सफल नहीं होने दिया जाता। भारत की अपेक्षा विकसित देशों अमेरिका, इग्लैंड फ्रांस, जापान आदि देशों में राजनीति का इतना व्यवसायीकरण नहीं है।

3 **राजनीति में** भ्रष्टाचार – भ्रष्टाचार एक अभिशाप है और राजनीतिक भ्रष्टाचार सब भ्रष्टाचारों से बुरा है। भारत में शासन का मुश्किल से ही कोई ऐसा हिस्सा होगा जहां भ्रष्टाचार न हो। देश के सभी दलों के नेता भ्रष्टाचार की निंदा करते हैं और चुनाव के समय सभी दल भ्रष्टाचार को समाप्त करने का वायदा करते हैं। आम चुनाव के समय यह सुनने को मिलता है कि भ्रष्टाचार ने लोकतंत्र को कमजोर बना दिया है और देश का वातावरण दूषित कर दिया है। भारत में जो भी राजनीतिक दल सत्ता में आया है, उसने भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगाया। राजनीतिज्ञ भ्रष्ट साधनों का प्रयोग करके राजनीति में भ्रष्टाचार बढाते हैं। भारतीय राजनीति में फैलता भ्रष्टाचार भारत जैसे विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र के लिए घातक है।

4 करिश्माई **नेतृत्व** – भारतीय संविधान द्वारा समस्त शक्तियों का स्रोत भारतीय जनता को माना गया है, परंतु व्यवहार में किसी न किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रधानता रही है। भारतीय राजनीति करिश्माई नेतृत्व के ईर्द–गिर्द घुमती रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नेहरू, इंदिरा, राजीव गांधी के नेतृत्व में सत्ता प्राप्ति रही। भारतीय जनता पार्टी ने 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सफलता प्राप्त की। 16वीं लोकसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने नरेंद्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व की बदौलत सफलता हासिल की। लोकतंत्र की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि लोक कल्याणकारी योजनाओं पर जोर दिया जाए न कि करिश्माई नेतृत्व पर।

5 **वोट की राजनीति** – भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता वोट की राजनीति का उदय होना है। किसी एक समुदाय या वर्ग को कानून द्वारा कुछ विशेष सुविधाएं उपलब्ध करवाकर उस समुदाय या वर्ग के वोटों को अपने पक्ष में करना ही वोट की राजनीति है। भारतीय संविधान द्वारा अनुसूचित जातियों, जनजातियों तथा अल्पसंख्यकों को कुछ विशेषाधिकार प्रदान किए गए हैं। इन वर्गों के मतों पर कांग्रेस पार्टी का अधिकार समझा जाता था। परंतु धीरे–धीरे अन्य दलों ने भी अपने घोषणा पत्र में इन वर्गों को महत्व देना शुरू कर दिया ताकि इन वर्गों के मतों पर आधिपत्य स्थापित किया जा सके। भारतीय जनता पार्टी आरक्षण को समाप्त करके एक समानता व एकरूपता स्थापित करने के पक्ष में रहती थी, लेकिन अभी वर्तमान समय में सवर्ण वर्ग को आरक्षण देने के प्रस्ताव पर भारतीय जनता पार्टी भी विचार कर रही है। ताकि सवर्ण वर्ग के वोटों का लाभ प्राप्त किया जा सके। राजनीतिक दलों के इस प्रकार के कार्य वोट की राजनीति से प्रेरित होते हैं। आम चुनावों के अवसर पर लगभग सभी राजनीतिक दलों ने क्षेत्रीय दलों के साथ अवसरवादी सिद्धांतहीन समझौते किए।

6 **लोकवादी नारें** – भारतीय राजनीति में लोकवादी नारों का बहुत अधिक महत्व है। इस प्रकार के नारे मतदाताओं को प्रभावित करते हैं। सन 1971 में कांग्रेस पार्टी ने गरीबी हटाओ का नारा लगाकर सफलता प्राप्त की। जनता पार्टी ने 1977 में लोकतंत्र बनाम तानाशाही का नारा देकर जनसमर्थन प्राप्त किया। सन 1980 में कांग्रेस ने ''सरकार वह जो काम करे'' का नारा दिया व सत्ता प्राप्त की। सन 1991 में भारतीय जनता पार्टी ने 'राम, रोटी और इंसाफ' का नारा दिया। सन 2004 के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 'इंडिया साइनिंग' का नारा दिया। 16वीं लोकसभा के आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 'काला धन वापिस' तथा 'भ्रष्टाचार मुक्त शासन' का नारा देकर जनसमर्थन प्राप्त किया।

7 **राजनीतिक दलों के भीतर लोकतंत्र का अभाव** – लोकतंत्र में राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से विद्यमान होते हैं। भारत में भी सभी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित है। परंतु व्यवहार में उनके भीतर लोकतंत्र का अभाव पाया जाता है। राजनीतिक दल अपने सगंठन के चुनाव समय पर नहीं करवाते हैं, दलों का कार्य दलों के केंद्रीय नेतृत्व द्वारा चलाया जाता है। लेकिन जब राजनीतिक दलों के संगठनात्मक चुनाव होते हैं तो एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की तानाशाही रहती है। विश्व के सबसे बडे लोकतांत्रिक देश में राजनीतिक दलों के संगठनात्मक चुनाव निष्पक्ष व पारदर्शी आधार पर नहीं होते हैं।

8 **राष्ट्रीय समस्याओं की अपेक्षा क्षेत्रीय समस्याओं पर बल** – भारतीय राजनीतिक संस्कृति की एक विशेषता यह है कि पिछले कुछ अर्से से राष्ट्रीय समस्याओं की अपेक्षा क्षेत्रीय समस्याओं पर अधिक बल दिया जाने लगा है। राष्ट्रीय राजनीतिक दलों ने भी क्षेत्रीय मुददों व क्षेत्रीय समस्याओं को अपने घोषणा पत्र में रखना शुरू कर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

दिया है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का निर्माण तो क्षेत्रीय समस्याओं के कारण होता है। क्षेत्रीय मुददों में क्षेत्रीय विकास की समस्या, नदी जल विवाद, सीमा विवाद, भाषायी अल्पसंख्यकों की समस्याएं आदि मुख्य हैं। क्षेत्रीय राजनीतिक दल राष्टीय हित की अपेक्षा क्षेत्रीय हित को तरजीह देते हैं।

9 **निम्न जातियों का राजनीति में बढता महत्व** – आजादी के बाद भारतीय राजनीति में निम्न जातियों का महत्व बढ गया है। भारतीय संविधान द्वारा निम्न जातियों के लिए राज्य विधानमंडलों, लोकसभा तथा सरकारी नौकरियों में स्थान आरक्षित रखे हुए हैं। वर्तमान समय में प्रत्येक राजनीतिक दल निम्न जातियों का समर्थन प्राप्त करने का हर संभव प्रयास कर रहा है। निम्न जातियों को एकजुट करने व एकता के सूत्र में बांधने का कार्य बहुजन समाज पार्टी ने किया है और एक राष्ट्रीय राजनीतिक दल का रूप धारण कर लिया है।

10 **हिंसा का प्रयोग** – अहिंसा का पालन भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से किया जाता रहा है। भारतीय संस्कृति का आधार अहिंसा है। परंतु स्वतंत्रता के पश्चात हिंसा ने भारतीय राजनीतिक संस्कृति में विशिष्ट स्थान बना लिया है। चुनावों के दौरान कुछ राजनीतक दल अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हिंसक साधनों का प्रयोग करते हैं। भारत में चुनावों के दौरान राजनीतिक हत्याएं भी होती रहती हैं। कई राजनीतिक दलों ने अपनी निजी सेनाओं का गठन कर रखा है, जो चुनाव आयोग के लिए निष्पक्ष चुनाव संपन्न करवाने में समस्या पैदा कर देते हैं। वर्तमान समय में कई दलों द्वारा मतदाताओं का घर से बूथ तक ले जाने के लिए बूथ संगठन का निर्माण किया गया है। ये बूथ संगठनकर्ता मतदाताओं को निष्पक्ष मतदान करने में रूकावट पैदा करते हैं। मतदाताओं पर दबाव बनाना व स्वतंत्र रूप से मतदान न करने देना भी हिंसा का ही रूप है। भारतीय राजनीति में हिंसा का प्रयोग लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत बडा खतरा है।

निष्कर्ष

भारत की राजनीतिक संस्कृति का संरचनात्मक पक्ष विकसित राजनीतिक व्यवस्था के समान है लेकिन व्यवहारिक रूप में परंपरागत तत्व विद्यमान है। भारतीय संसदीय प्रणाली का हम उदाहरण लेते हैं जो सरंचनात्मक रूप से ब्रिटेन की संसदीय व्यवस्था से मिलती है, परंतु व्यवहार में भारतीय सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित मिलती है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति के परंपरागत तत्वों में संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, अलगाववाद आदि सम्मिलित हैं। दूसरी तरफ आधुनिक तत्वों में धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, असंलग्नता, नागरिक स्वतंत्रताएं, समन्वयकारी दृष्टिकोण इत्यादि तत्व सम्मिलित हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 आर सी अग्रवाल , राजनीतिक सिद्धांत [नई दिल्ली: एस चंद एंड कम्पनी 2008]
2 समीरदास गुप्ता, राजनीतिक समाजशास्त्र [नई दिल्ली: पीयर्सन एजूकेशन इंडिया 2011]
3 जी.ए.आमण्ड व जी.बी.पावेल, कम्पेरटिव पोलिटिक्स, डेवलैपमेंट अपरोच [नई दिल्ली: एमेरेंड पब्लिशिंग को. 1972]
4 जे.सी. जौहरी, राजनीतिक समाजशास्त्र [आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन्ज 2008]

RRIJM 2015, All Rights Reserved